ISSN 0041 - 2651

TRIBE ट्राइब

समकक्ष व्यक्ति समीक्षित त्रैमासिक पत्रिका
(PEER-REVIEWED QUARTERLY JOURNAL)

खण्ड 50 (2-4)
खण्ड 51 (1)

(2-4)
अप्रैल-दिसम्बर 2018
(1)
जनवरी-मार्च 2019

जनजाति मेले एवं त्योहार विशेषांक

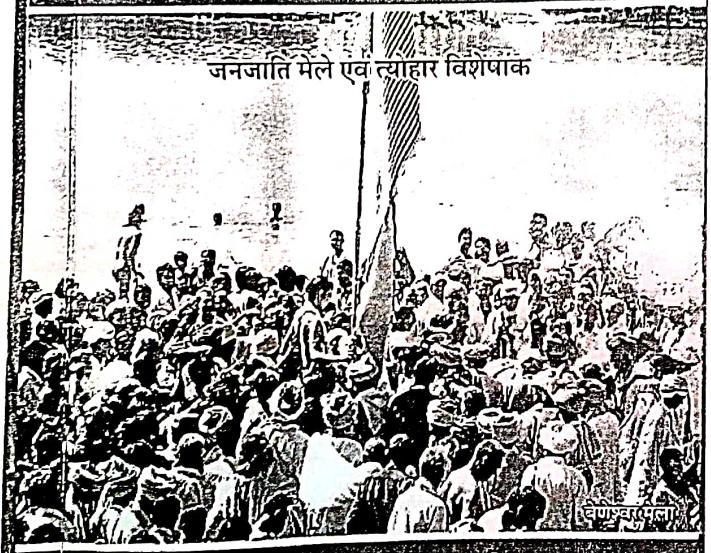

माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान
अशोक नगर, उदयपुर (राजस्थान)

संरक्षक
भवानी सिंह देथा
आयुक्त
जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, राजस्थान, उदयपुर (राज.)

प्रधान सम्पादक
दिनेश चन्द्र जैन
निदेशक

सम्पादक मण्डल
बी.एल. कटारा
निदेशक (सा.)

ज्योति मेहता
संयुक्त निदेशक (सा.)

अतिथि सम्पादक
डॉ. नवीन नन्दवाना
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

पत्रिका संयोजक
दिनेश कुमार उपाध्याय
कलाकार

सम्पर्क सूत्र
प्रधान सम्पादक (ट्राईब त्रैमासिक)
माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान
अशोक नगर, पोस्ट बॉक्स नम्बर-86, उदयपुर-313001 (राज.)
दूरभाष : 0294-2410958, 2414352, फैक्स : 0294-2410958
वेबसाईट : *www.tad.rajasthan.gov.in/tri*
ई-मेल : *triudaipur@gmail.com*

ISSN 0041 - 2651

'ट्राईब' में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं तथा लेखक स्वयं इसके लिए उत्तरदायी हैं। प्रकाशित विचारों से सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

आलेख एवं शोध पत्र आमंत्रण

जनजातियों के जीवनवृत्त से सम्बन्धित विभिन्न आयामों, समस्याओं, परम्पराओं एवं विकास प्रक्रिया से सम्बन्धित मौलिक, प्रामाणिक एवं अप्रकाशित लेख/शोध पत्र 'ट्राईब' में प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। लेखक शोध आलेख 'कम्प्यूटर सीडी (सोफ्ट कॉपी) सहित एक टंकितप्रति (हार्डकॉपी) के साथ प्रेषित करावें।

TRIBE
ट्राईब

(जनजाति मेले एवं त्योहार विशेषांक)

ISSN 0041 - 2651

PEER-REVIEWED QUARTERLY JOURNAL IN HINDI AND ENGLISH

समकक्ष व्यक्ति समीक्षित हिंदी व अंग्रेजी में त्रैमासिक पत्रिका

Vol. 50 (2-4)
51 (1)

M. L. VERMA RESEARCH & TRAINING INSTITUTE
ASHOK NAGAR, UDAIPUR - 313 001

माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान
अशोक नगर, उदयपुर (राजस्थान) - 313001

अतिथि संपादक की कलम से

साहित्य और लोक का सीधा और गहरा संबंध रहा है। साहित्य ने सदा ही शब्दों के माध्यम [illegible] को अभिव्यक्ति प्रदान की है। लोक के साथ साहित्य के संवाद का एक सनातन रिश्ता है। [illegible]य ने लोक के हास–विलास, दुःख–दर्द और विविध क्रीड़ाओं को अपने लेखन का विषय [illegible]। साहित्य के माध्यम से ही लोक की विविध गतिविधियों को संवेदनाओं की तूलिका से [illegible]र रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से उस संवेदना को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास है।

भारतीय लोक जीवन अपनी विशेष महत्ता रखता है। भारत देश में हम रोजमर्रा की जिंदगी [illegible] उत्सव, पर्व, त्योहार और मेलों की खनक महसूस कर सकते हैं। एक उक्ति यह भी प्रचलित है [illegible]मारे देश में 'सात वार और नौ त्योहार' की परिपाटी रही है। कहने का अभिप्राय यह है कि हमारे [illegible]का लोकजीवन उत्सवप्रियता से सराबोर है। उसकी उपस्थिति रोजमर्रा के दैनन्दिन जीवन में [illegible]हसूस कर सकते हैं। बात यदि लोक जीवन के भी आदिवासी पक्ष को लेकर हो तो यह और भी [illegible]पूर्ण हो जाता है। भारत देश और विशेषतः राजस्थान के आदिवासी जीवन और संस्कृति पर [illegible]डालें तो हम पाते हैं कि विविध अभावों और सुभावों सबको भूलकर यहाँ का आदिवासी विविध [illegible], पर्वों और मेलों आदि में अपने जीवन का आनंद लेता हुआ उनका भरपूर मजा लेता है। प्रकृति [illegible]रे जुड़ाव रखने वाले आदिवासी जीवन की ज्यादा उत्सवमयी त्योहारों और मेलों की संस्कृति में [illegible] और पर्यावरण अपना विशेष स्थान रखते हैं।

ट्राइब पत्रिका का यह अंक राजस्थान के आदिवासी जीवन में उत्सव, पर्व, त्योहार और [illegible]की भूमिका और लोकजीवन से उनकी गहरी संसक्ति की पड़ताल करता है। इस अंक में इस [illegible]पर प्रमुख रूप से ध्यान दिया गया है कि राजस्थान की विविध आदिवासी जातियाँ किन–किन [illegible]रों व मेलों में पूरे उत्साह और उमंग से भाग लेती हैं। राजस्थान के आदिवासी जीवन और [illegible]ति की महक इन विविध त्योहारों और मेलों के अवसर पर किस प्रकार महकती है। किस प्रकार [illegible]ने सुख–दुःख भूलकर इन त्योहारों व मेलों के अवसर पर अपने जीवन का उन्मुक्त आनंद लेते [illegible]न सब बातों का आकलन इस अंक के आलेखों के माध्यम से संभव हो सकेगा। आदिवासी [illegible]जीवन और संस्कृति की मधुर गंध के कुछ छींटों से हम भी उस महक से स्वयं को सुगंधित कर [illegible]। इस अंक के विविध आलेख इन्हीं आदिवासी तीज–त्योहारों और मेलों की संस्कृति पर विशेष तीन [illegible] प्रकाश डालते हैं। इस अंक को दो भागों में विभक्त किया गया है। खंड 'अ' आदिवासी जीवन [illegible] मेलों व त्योहारों से संबंधित है। वहीं खंड 'ब' आदिवासी संस्कृति, कला व साहित्य से जुड़े [illegible] को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। खंड 'स' अनुसूचित क्षेत्र (राजस्थान राज्य)

मैं माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध व प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक और अन्य समस्त आदेश, [illegible]यों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे पत्रिका के इस अंक का अतिथि संपादक बनाकर आदिवासी 2018 [illegible]जीवन से जुड़े त्योहारों, मेलों और उनकी संस्कृति के विविध पहलुओं पर पढ़ने और कुछ नया [illegible] का अवसर प्रदान किया। साथ ही उन सभी आलेख लेखकों का भी आभार जिनके अकादमिक से [illegible]ग से यह अंक प्रकाशित हो पाया। संबंधित है

[illegible]द।

डॉ. नवीन नंदवाना
अतिथि संपादक

219

खण्ड (ब) संस्कृति, कला एवं साहित्य

क्र.सं.	आलेख	लेखक	पृ.सं.
11	जनजातीय लोककला मांडना में भित्ति पर निर्मित मांडना रूपाकारों में रूप का रूपांतरण	शिखा गौतम	
12	दक्षिणी राजस्थान का संत साहित्य	अमित कुमार चौधरी	
13	भीलों का सामाजिक व धार्मिक उत्सव : गवरी	डॉ. सुनीता खण्डेलवाल	
14	आदिवासी प्रदर्शन कला का अनुसरण करती समकालीन कला	डॉ. संदीप कुमार मेघवाल	
15	समकालीन हिंदी कहानियों में आदिवासी जीवन	डॉ. नवीन नंदवाना	86-94
16	जनजाति प्रेरणा गीत	हनुमान सिंह गुर्जर	

खण्ड (स)

क्र.सं.		पृ.सं.
17	अनुसूचित क्षेत्र के विस्तार के संबंध में भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना दिनांक - 19–05–2018	

समकालीन हिंदी कहानियों में आदिवासी जीवन

डॉ. नवीन नन्दवाना*

विगत कुछ दशकों से हिंदी साहित्य में विमर्शों की गूँज–अनुगूँज सुनाई पड़ना प्रारंभ हुई। जीवन की बुनियादी जरूरतों व समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हाशिये का समाज धीरे–धीरे चर्चा का विषय बना और अल्प समय में ही इस वर्ग ने केंद्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कुछ ही दशक हुए होंगे कि हमारा हिंदी समाज उन सब विषयों पर गंभीरता से सोचने लगा, जो अब तक गौण समझकर उपेक्षित किए जा रहे थे। विमर्शों की शुरुआत भले ही स्त्री विमर्श से हुई हो किंतु आज जो सर्वाधिक चर्चित विषय के रूप में जाना जाता है, वो आदिवासी विमर्श है। विमर्शों को लेकर चिंतन व लेखन की इसी परम्परा ने हाशिये का जीवन जी रहे आदिवासी समाज की उपस्थिति केंद्र की ओर करवाई। साहित्य की विविध विधाओं में आदिवासी समाज व संस्कृति को अभिव्यक्ति मिली।

आदिवासी जीवन के विविध पहलुओं को लेकर आदिवासी व गैर आदिवासी वर्ग के रचनाकारों ने प्रमुखता से लेखन कार्य किया। इस वर्ग के यथार्थ को उद्घाटित करने में वाल्टर भेंगरा 'तरुण', पुन्नी सिंह, वंदना टेटे, रामदयाल मुंडा, हरिराम मीणा, संजीव, रणेंद्र, रोज केरकेट्टा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। यदि कहानी की बात की जाए तो आज हमें आदिवासी जीवन को कहानी में चित्रित करने वाले, उनके यथार्थ को उद्घाटित करने वाले कहानीकारों की चार पीढ़ियाँ ध्यान में आती है। पहली पीढ़ी के कहानीकारों में सबसे पहला नाम एलिस एक्का का है, जो संभवतः पहली आदिवासी हिंदी कथाकार हैं। इनके समकालीन रचनाकारों में रोज केरकेट्टा (खड़िया), लको बोदरा (हो), आयत उराँव (कुडुख), रघुनाथ मुर्मू (संताली), बलदेव मुंडा (मुंडारी) आदि प्रमुख हैं। इस परम्परा की दूसरी पीढ़ी में तेमसुला आओ, रामदयाल मुंडा, रोज केरकेट्टा, पीटरपौल एक्का, वाल्टर भेंगरा 'तरुण', नारायण, कृष्ण चंद्र टुडू, येसे दरजे थोंगसी, शिशिर टुडू, मंगल सिंह मुंडा और लक्ष्मण गायकवाड़ प्रमुख हैं। सिकरादास तिर्की और फ्रांसिस्का कुजूर तीसरी पीढ़ी के रचनाकार हैं। जबकि चौथी व युवा पीढ़ी में गंगासहाय मीणा, राजेंद्र मुंडा, कृष्णमोहन सिंह मुंडा, रूप लाल बार्दिया, ज्योति लकड़ा, सुंदर मनोज हेम्ब्रम और जनार्दन गोंड आदि का उल्लेख किया जाना अपेक्षित है।

इन रचनाकारों का कहना है कि आदिवासी समाज की अपनी संस्कृति है। उसकी अपनी जीवन शैली है। वह अपनी जरूरतों के लिए बाजार पर कम से कम आश्रित रहता है। अभाव में भी उसके जीवन के गान अपनी विशिष्टता लिए होते हैं। किंतु

*सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, (राजस्थान) 313001

तथाकथित सभ्य व विकसित कहे जाने वाले वर्ग ने उसके जीवन में अवांछित हस्तक्षेप कर उसके सुखचैन को छीनने का प्रयास किया है। वह आदिवासी उड़ीसा, झारखंड, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात आदि देश के किसी भी कोने में हो, पर वह कभी विकास परियोजनाओं के नाम पर तो कभी औद्योगिकीकरण के नाम पर ठगा जाता रहा है। आज उसका जीवन ही नहीं उसकी भाषा, संस्कृति सब कुछ क्षरण की ओर बढ़ रही है। वह न तो पूरा तथाकथित सभ्य हो पाया है और न ही पूरा अपनी संस्कृति के साथ रह पाया है। आज वह दोराहे पर खड़ा है और दिग्भ्रम की स्थिति में है। आदिवासी जीवन व संस्कृति को केंद्र में रखकर लेखन कर रहे रचनाकारों ने उस आदिवासी जीवन की इसी दशा को अपनी कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना आदि के माध्यम से वाणी प्रदान की है।

आदिवासी जीवन की त्रासद गाथा को लिखते हुए एलिस एक्का अपनी कहानी 'दुगी के बच्चे और एल्मा की कल्पनाएँ' के माध्यम से आर्थिक विपन्नता का जीवन जी रहे परिवारों का करुण गान गाती हैं। कहानीकार का हृदय कारुणिक हो लिखता है– "हाय री दुनिया! एक ही सृष्टिकर्ता परमपिता की संतानों में इतना फर्क ! कोई हिंडोले पर झूलता है और कोई सिर पर मैला की बाल्टी लेकर घर–घर डोलता है ! हाय विधाता, तुम्हारा क्या यही न्याय है ? और कितना घिनौना काम है यह ? क्या हमारे देश से इस कार्य का कभी अंत नहीं होगा ?"[1]

वैश्वीकरण ने हमारे जीवन को बहुत प्रभावित किया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की आवाजाही बढ़ी। प्रकृति व पर्यावरण के साथ खिलवाड़ बढ़ा और आदिवासी का जंगल धीरे–धीरे उसके हाथ से छिनता गया। हरिराम मीणा लिखते हैं कि– "उपनिवेशवाद काल में एवं ईस्ट इंडिया कंपनी ने किस कदर भारत को लूटा था, यह समझदार लोगों की स्मृति से ओझल नहीं हुआ है और अब सैंकड़ों बहुराष्ट्रीय कंपनियों की घुसपैठ हो चुकी है जिनका दुहरा मकसद एक भारत के प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और दूसरा भारत को उनका बाजार बना देना है।"[2]

जंगल पर आदिवासी का अधिकार होता है। वह उसका रक्षक व पोषक है। वह जंगल से उतना ही लेता है जितना कि उसके लिए आवश्यक है किंतु समय के साथ पनपी नौकरशाही व्यवस्था ने उस आदिवासी के सहज जीवन में दखल देना प्रारंभ किया। अब उसके जंगल व जंगल की लकड़ी व अन्य उत्पादों पर सरकारी विभागों की मोहर लग गई। अब उसके जंगल से लकड़ी काटने पर उसे ही सजा मिलने लगी। इस पीड़ा को आदिवासी कथाकार वाल्टर भेंगरा 'तरुण' अपनी कहानी 'जंगल की ललकार' में अभिव्यक्ति देते हैं। कहानी आदिवासियों के साथ हो रहे शोषण को इस प्रकार दर्शाती है– "तो फिर क्या करूँ ? अब्बा कहता। जंगल से हम लकड़ी काट नहीं सकते। बरखा नहीं तो अनाज नहीं। बोल, खायेगा क्या ?... यही जंगल था। बाप–दादा के जमाने से। तब यह हमारा था। जंगल उन दिनों कभी इस तरह उजाड़ नहीं था। लकड़ियाँ उन दिनों भी काटते थे हम। आज यह सरकार कहाँ से आ गई। अब उसका जंगल हो गया। सरकार का जंगल क्या हो गया, सारा जंगल नष्ट हो गया।"[3]